क्रं. –66, 16/08/2017

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
Indira Gandhi Krishi Vishwavidyalaya
शहीद गुंडाधूर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र
Shaheed Gundadhoor College of Agriculture & Research Station
कुम्हरावण्ड, जगदलपुर – 494001 Kumhrawand, Jagdalpur – 494001 (C.G.)
Ph. (O) - 07782 - 229150 (Fax) 229360 (R) 229343 Email - zars_igau@rediffmail.com

क्र./श.गु.कृ.महा.एवं अनु.केन्द्र/2017–18/ GKMS *जगदलपुर, दिनांक 16/08/2017*

बस्तर पठार कृषि जलवायु क्षेत्र के लिए कृषि सलाह सेवा बुलेटिन (12 से 16 अगस्त 2017)
पिछले सप्ताह की विशिष्ठ मौसम स्थितियाँ

वर्षा मि.मी.	37.1
अधिकतम तापमान डिग्री. से.	28.3 - 31.0
न्युनतम तापमान डिग्री. से.	22.0 - 23.3
सापेक्ष आर्द्रता प्रतिशत	77 - 98
वायु गति कि.मी./घंटा	2.7 - 5.6

पिछले सप्ताह कृषि मौसम वेधशाला, कुम्हरावण्ड में मि.मी. 37.1 वर्षा दर्ज की गई। अधिकतम तापमान 28.3 से 31.0 डिग्री सेंग्रे. के बीच रहा। न्यूनतम तापमान 22.0 से 23.3 डिग्री सेग्रे. के मध्य रहा। सापेक्ष आर्द्रता 77 से 98 प्रतिशत के मध्य दर्ज की गई। वायु गति 2.7 से 5.6किमी./घंटा के मध्य रही।

16 से 20 अगस्त 2017 तक मौसम पुर्वानुमान सुकमा

मौसम कारक	पुर्वानुमान				
	दिवस –1 16 अगस्त	दिवस –2 17 अगस्त	दिवस –3 18 अगस्त	दिवस –4 19 अगस्त	दिवस –5 20 अगस्त
वर्षा मि.मी.	**40**	**30**	**15**	**10**	**13**
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रें)	29	29	28	28	30
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रें)	24	24	24	24	23
कुल बादल की मात्रा (प्रतिशत)	100	100	100	87.5	100
सापेक्ष आर्द्रता (सुबह/शाम)	93/74	95/76	97/75	97/80	97/83
वायु गति कि. मी./घण्टा एवं दिशा	4/SW	4/SW	4/W	4/SW	3/NW

भारत मौसम विज्ञान विभाग रायपुर द्वारा जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आने वाले **5** दिनो में छत्तीसगढ़ के बस्तर पठारी भाग में बारिश होने एवं बादल छायें रहने की तथा हवा में **74 से 97** प्रतिशत नमी होने की संभावना है। अधिकतम तापमान लगभग **28** से **30**°C रहने की संभावना है एवं न्यूनतम तापमान 23 से **24**°C के बीच दर्ज किए जाने की संभावना है। आने वाले दिनो में हवा **दक्षिण – पश्चिम** एवं **उत्तर–पश्चिम** दिशा से चलने की संभावना है, तथा इसकी गति लगभग **3 से 4** किलोमीटर/घंटा रहने कि संभावना है।

मौसम आधारित कृषि सलाह

<table>
<tr><td>बीजोपचार</td><td>खरीफ मौसम के फसलो के बीजों का बीजोपचार जरूर करें।
➢ (क) अदैहिक दवायें:– इन दवाओं से उपचारित करने पर सभी फसलों के बीज सतह पर मौजूद फफूंद नष्ट जाती है। इनमें प्रमुख थीरम, केप्टान, डायथेन एम–45। इन दवाओं की 3.5 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से उपयोग करें।
➢ (ख) दैहिक दवायें:– इन दवाओं से उपचारित करने से बीज के भीतर मौजूद फफूंद नष्ट हो जाती है साथ ही यह बीजांकुर को भी 15–20 दिनों तक रोगों से सुरक्षा प्रदान करती है। इनमें मुख्यतः वीटावैक्स एवं बाविस्टिन का उपयोग 2 से 2.5 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीजदर से उपयोग में लाना चाहिए।
➢ (ग) जैव उत्पाद (बायोएजेन्ट) – ट्राइकोड्रमा हारजियनम या ट्राइकोड्रमा स्पीजीज6–8 ग्राम प्रति किलोग्राम बीजदर से उपचारित करे तथा आवश्यकता होने पर जीवाणु स्यूडोमोनास फ्यूरोसेन्स से भी बीजोपचार करे।</td></tr>
<tr><td>खरीफ फसल</td><td>❖ धान के खेतों में जल संग्रह कर रखें तथा दलहनी, तिलहनी एवं मक्के के फसलों में जल निकास की व्यवस्था करें।
❖ बंकी एवं पत्ती मोड़क कीट के नियत्रण के लिये क्लोरापायरीफॉस 2मि.ली./ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
❖ धान एवं लघु धान्य फसलों मे झुलसा (ब्लास्ट) रोग के लक्षण दिखाई देने पर ट्राइसाइक्लाजोल 100 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़के।
❖ धान में चोड़ी पत्ती वाले खरपतवार के नियंत्रण हेतु बिसजइराबेक सोडियम/फेरोक्सीप्रोप पी एथाइल+ मेटसल्फ्यूरान मिथाइल का प्रयोग करें।
❖ शीघ्रताशीघ्र बियासी का कार्य पूर्ण करे तथा बियासी के समय ही डी.ए.पी., यूरिया तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश का प्रयोग धान की अच्छी बढ़वार एवं पैदावार लेने हेतु करे।
धान की फसल के लिए पोषक तत्वों (नत्रजन स्फूर व पोटाश)की मात्रा (कि.ग्रा./हे.)
<table>
<tr><th>क्र.</th><th>धान की अवधि</th><th>नत्रजन</th><th>स्फूर</th><th>पोटाश</th></tr>
<tr><td>1</td><td>80 – 100</td><td>40–60</td><td>20–40</td><td>10–15</td></tr>
<tr><td>2</td><td>101 से 125 (बौनी फसल)</td><td>60–80</td><td>30–40</td><td>15–20</td></tr>
<tr><td>3</td><td>126 से 140</td><td>80–100</td><td>40–50</td><td>20–25</td></tr>
<tr><td rowspan="3">4</td><td colspan="4">141 से अधिक</td></tr>
<tr><td>• बौनी किस्में</td><td>80–100</td><td>40–50</td><td>20–25</td></tr>
<tr><td>• ऊंची किस्में</td><td>40–60</td><td>20–30</td><td>10–15</td></tr>
</table>
स्फूर एवं पोटाश का उपयोग आधार पर करें एवं यूरिया खाद को 3 भाग में बाटकर उपयोग करें।
❖ मक्का फसल के अन्तवर्तीय के रूप में ले एवं निदाई गुड़ाई की व्यवस्था करें तथा खाद डालकर</td></tr>
</table>

	मिट्टी चढ़ायें । ❖ **दलहनी फसलों जैसे उड़द, मूंग सोयाबीन आदि मे खरपतवार नियंत्रण हेतु पौध आने के बाद सोडियम एसिफलओरफेन+क्लोडिनोटोप–प्रोफाल नामक दवाओं का प्रयोग करें।** ❖ कन्दीय फसलों में निदाई–गुड़ाई करे तथा खाद डालकर मिट्टी चढ़ायें एवं जल निकास की व्यवस्था करें। ❖ काजू के अनुशंसित किस्म वी–4, इंदिरा काजू–1 के कलमी पौधों का रोपण करें। ❖ काजू पौधें में थाला बनाकर खाद का उपयोग करें। ❖ गन्ने की फसल में आवश्यकता अनुसार निंदाई गुड़ाई एवं मिट्टी चढ़ायें।
सब्जी	❖ टमाटर , मिर्च में थ्रीप्स किट के लिए डायमेथोएट का 1.5 मि.लि./लीटर पानी की दर से छिड़काव करें एवं दुसरा छिड़काव 15 दिन बाद 5 प्रतिशत का करें। ❖ सब्जी वाली फसलों में मुख्यतः थ्रीप्स एवं लाल मकड़ी का प्रकोप होता है। थ्रीप्स के निदान हेतु डायमेथोस्ट 30ईसी का 1.5 मिली/लिटर पानी का स्प्रे प्रभावी होता है। लाल मकड़ी के निदान के लिए डायकोफाल 1 मिली/लिटर की दर से दिड़काव करें। ❖ भिण्डी एवं बरबट्टी में तना छेदक एवं फल भेदक का प्रकोप होने पर इसके नियंत्रण हेतु 1 से 1.5मिली. क्लोरोपायरीफास का छिड़काव करें। ❖ सब्जियों में मैनी, तैला एवं चैंपा का आक्रमण होने पर पीला प्रपंच लगाये साथ ही डायमेथोएट का 1.5 मि.ली./लिटर पानी की दर से छिड़काव कर सकते है।
पशुपालन	❖ कृमिनाशक का उपयोग प्रत्येक तीन माह के अन्तराल पर मुर्गीयों को कृमि रोग से मुक्त करने के लिये करें। ❖ यथा सम्भव पशुवाडे को सुखा रखे। जिससे कि कीट एवं बीमारियों से बचाव के साथ–साथ पशुओं एवं पशुपालक के फिसलने से भी बचाव हो सके।

प्रयोजक – भारतीय मौसम विभाग (भूमि विज्ञान मंत्रालय), नई दिल्ली, सहयोग–अखिल भारतीय समन्वित बारानी खेती परियोजना, हैदराबाद

अधिष्ठाता